गरमा मूंग की वैज्ञानिक खेती

चतरा जिले में खरीफ और रबी फसल के बाद किसान जायद की फसल बहुत कम क्षेत्रों में लेते हैं और अधिकांश क्षेत्र परती छोड़ देते हैं। जायद की फसल अर्थात् फरवरी एवं मार्च माह में गरमा मूंग की खेती किसानों के लिये एक वरदान है। गरमा मूंग लगाने से किसानों को अच्छी आय प्राप्त होती है साथ ही भूमि की उर्वरा शक्ति व संरचना बनाने में सहायता प्रदान करती है। मूंग की फसल गरमा में लगे रहने से गर्म हवा से भूमि की उपरी परत का बचाव होता है तथा इसकी जड़े वातावरण से वायुमण्डलीय नाईट्रोजन को स्थिर कर भूमि को नाईट्रोजन प्राप्त कराते हैं। मूंग शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का मुख्य स्रोत है। किसान के पास जितनी भूमि सिंचित है उतने क्षेत्र में मूंग लगाने से अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। इसका औसत उत्पादन 12–15 क्वि0 प्रति हे0 होता है। मूंग की उपज कम होने के कई प्रमुख कारण हैं:–

- उन्नत एवं अनुशंसित किस्मों के बीज किसानों का न मिल पाना।
- मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियॉ।
- सिंचाई का अभाव।
- पशु को खुला चराना।
- खाद व उर्वरकों का सही समय पर एवं उचित मात्रा में प्रयोग न करना।

उपरोक्त पहलुओं को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक पद्धति से खेती करके चतरा जिले में मूंग की पैदावार में आशातीत वृद्धि की जा सकती है। तथा प्रति व्यक्ति दाल की उपलब्धता स्तर भी सुधारा जा सकता है। अतः इस क्षेत्र के कृषक अच्छी फसल हेतु निम्नलिखित वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करके अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

उन्नत किस्मों का चयन

गरमा मूंग के लिए MSL 688 प्रजाति का प्रयोग करें। यह प्रजाति रोग अवरोधी व गरमी के लिए उपयुक्त है।

भूमि का चयन व तैयारी

मूंग की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी0एच0 6–6.5 हो तथा जिसमें जल निकास का उचित प्रबंधन हो, अच्छी रहती है। एक जुताई मिट्टी पलट हल से करके 2–3 जुताई कल्टीवेटर, हैरो या देशी हल से करनी चाहिये। इसके बाद पाटा लगाकर भूमि का समतल कर लेना चाहिए।

बुआई का समय

गरमा मूंग की बोआई मध्य फरवरी से मध्य मार्च तक उचित व उत्तम होता है।

बीज दर

गरमा मूंग के लिए प्रति हे0 30 कि0ग्र0 बीज की आवश्यकता होती है।

बीजोपचार

बुआई से पहले बीज को फफूंदीनाशक दवा जैसे कार्बेंडाजिम से 2 ग्राम प्रति किलो बीज की मात्रा से उपचारित करना चाहिए। साथ ही राइजोबियम कल्चर का प्रयोग करना चाहिए। कल्चर के पैकटों को खाद व दवाओं से दूर रखें।

बुआई की दूरी

गरमा मूंग की बोआई सदैव पंक्तियों में करनी चाहिए। इसके लिए पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 से0मी0 तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 से0मी0 रखनी चाहिए।

खाद एव उर्वरक

जुताई के समय गोबर की सड़ी खाद 5 टन प्रति हे0 देनी चाहिए। इसके अलावा नाईट्रोजन 25 किलो, फॉस्फोरस 50 किलो, पोटाश 25 किलो और सल्फर 20 किलो प्रति हे0 देना चाहिए। नाईट्रोजन की आधी मात्रा फॉस्फोरस, पोटाश और सल्फर की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय देनी चाहिए। शेष नाईट्रोजन 6–7 पत्ते के होने पर प्रयोग करना चाहिए।

खर–पतवार नियंत्रण

पहली निराई–गुड़ाई बोआई के 15–20 दिनों के बाद एवं दूसरी 35 दिनों के बाद खुरपी एवं कुदाल से करना चाहिए। रासायनिक विधि से एलाक्लोर (लासो 50 ई.सी.) की चार लीटर मात्रा को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर बोआई के तुरंत बाद पाटा लगाकर छिड़कावा करने से खर–पतवारों को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

कीट–प्रबंधन

क) भुआ पिल्लू – प्रारंभिक अवस्था में पिल्लू पत्तियों की हरियाली चाट जाती है। बड़ा होने पर पूरी पत्तियों को बुरी तरह से खा जाती है।
नियंत्रण – डाईक्लोरोवॉस तरल 1 लीटर प्रति हे0 के हिसाब से छिड़काव करें।
ख) फलीछेदक – फलियों के दाने के उपर छेद बनाती है तथा उसमें अपना अग्र भाग डालकर दानों को खाती है।
नियंत्रण – मोनोक्रोटोफॉस तरल का एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रोग प्रबंधन

क) मौजेक – पत्तियों तथा फलियों पर बैंगनी लाल वृताकार अथवा अनियंत्रित आकार के धब्बे बनते हैं। जिसका मध्य भाग भूरे रंग का होता है।
नियंत्रण – मैटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. एक मिली लीटर प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
ख) जालीदार अंगमारी रोग – पौधे के सभी हरे भागों पर नीले, भूरे रंग के धब्बे बन जाता हैं जिससे पूरा पौधा सूख जाता है।
नियंत्रण – बीज को बीज उपचार कर बोआई करें। इण्डोफिल एम.45 (मैंकोजेब) दो किलो ग्राम प्रति हे0 की दर से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

संरक्षक
श्री मनोज कुमार
उपायुक्त सह अध्यक्ष, आत्मा चतरा
प्रायोजक
श्री धीरेन्द्र कुमार पाण्डे
परियेाजना निदेशक, आत्मा चतरा
श्री राजेश कुमार सिंह
उप उपयोजना निदेशक, आत्मा चतरा
सामाग्री– श्री सुधीर कुमार (प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक, आत्मा)
टंकण – अमित कुमार सिन्हा (कम्प्युटर सहायक, आत्मा)
वेबसाईट– www.atmachatra.org
ईमेल– atmactr@rediffmail.com
atmactr@gmail.com